✺ 2 मई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] अभी तुम बच्चे जानते हो कि हम नास्तिक से आस्तिक बने हैं। रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त के ज्ञान को अभी तुमने एक्यूरेट जाना है।

2] तुम्हारी आत्मा अभी सुधर रही हैं। आत्मा ही बिगड़कर पाप आत्मा बन गई थी। पापा आत्मा उनको कहा जाता है जिसकी क्रिमिनल दृष्टि होती है, वह क्रिमिनल आई तो सिवाए बाप के और कोई सुधार न सके। ज्ञान के सिविल चक्षु एक बाप ही देते हैं। यह ज्ञान भी तुम जानते हो। शास्त्रों में यह ज्ञान थोड़ेही है।

3] जिस धरती पर भगवान् का पांव लगा, वह धरनी कभी विनाश नहीं हो सकती। यह भारत तो रहना है ना देवताओं के लिए। सिर्फ यह चेन्ज होता है। बाकी भारत तो है सच खण्ड, झूठ खण्ड भी भारत ही बनता है।

4] इनका नाम भी बाद में बाबा ने ब्रह्मा रखा है। नहीं तो ब्रह्मा का बाप कौ? जरूर कहेंगे शिवबाबा। कैसे रचा? एडाप्ट किया। बाप कहते हैं मैं इनमें प्रवेश करता हूँ तो लिखना चाहिए शिव भगवानुवाच– मैं ब्रह्मा में प्रवेश करता हूँ। वह भी जब वानप्रस्थ अवस्था होती है तब आता हूँ।

5] ज्ञान धन में इतनी शक्ति है जो अनेक जन्मों के लिए राजाओं का राजा बना देती है।

✺ योग-

1] बाप की श्रीमत है तुम्हें नर्क और नर्कवासियों से बुद्धियोग हटाकर स्वर्ग को याद करना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते नर्क को बुद्धि से त्याग दो।

✺ धारणा-

1] अभी वानप्रस्थ अवस्था है इसलिए बेहद का सन्यासी बनकर, सबसे बुद्धियोग हटा देना है। पावन बनना है और दैवीगुण धारण करने हैं।

✺ सेवा-

1] यह लक्ष्मी-नारायण तो तुम पढ़ाई से बनते हो। पढ़कर फिर सबको पढ़ाना भी है।

2] बहनों और भाइयों, आकर रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनो, पढ़ाई पढ़ो, जिससे तुम यह बनेंगे। यह ज्ञान पाने से और सृष्टि को समझने से तुम ऐसे चक्रवर्ती सतयुग के महाराजा और महारानी बन सकते हो। यह लक्ष्मी-नारायण भी इस पढ़ाई से बने हैं। तुम भी पढ़ाई से बन रहे हो।

3] सतगुरु बाप की याद से बुद्धि को सतोप्रधान बनाना है। सच्चा बनना है। आस्तिक बनकर आस्तिक बनाने की करनी है।